जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन का मुखपत्र अंक - 2 | मई - जून , 2023

वसुंधरा समाचार

जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन

'वसुंधरा' एक व्यापक सांस्कृतिक मंच है—साहित्य, कला, रंगमंच और सिनेमा का!

हमारे पवई (मुंबई) और आदर्श नगर (जयपुर) स्थित पुस्तक केन्द्रों में आप हिंदी, अंग्रेज़ी और मराठी की उत्कृष्ट पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीद और पढ़ सकते हैं। यहाँ आपको उपन्यास- कहानी, कविता और नाटक के अलावा सिनेमा, रंगमंच, यात्रा, दर्शन, धर्म, शायरी, हास्य-व्यंग, पर्यावरण, इतिहास, लैंगिक समानता, समसामयिक सामाजिक-राजनीतिक, भोजन, स्वास्थ्य आदि आदि पर भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों का एक समृद्ध और विविध संग्रह मिलेगा, जिसमें क्लासिक्स के साथ-साथ नवीनतम पुरस्कृत पुस्तकें शामिल हैं। इन्हें आप हमारे पुस्तक केन्द्रों के अलावा व्हाट्सएप/वेबसाइट से घर बैठे भी मंगा सकते हैं।

हम पोस्टर भी स्टॉक करते हैं। जूनियर पाठकों के लिए हमारे विशेष खंड में सभी उम्र के बच्चों के लिए किताबें और गतिविधि पुस्तिकाएं मिलेंगी। एक नीति के तहत हम सभी पुस्तकों पर न्यूनतम छूट देने के अलावा समय-समय पर विशेष ऑफर भी घोषित करते हैं। यदि संयोगवश आपकी पसंद की कोई पुस्तक हमारे पास नहीं है तो हम उसे आपके लिए यथाशीघ्र मंगवाने की व्यवस्था करेंगे।

'वसुंधरा' अपने केन्द्रों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कविता-कहानी पाठ, संगीत, चर्चाओं आदि का भी आयोजन करती हैं। जयपुर केंद्र में स्थित पंजीकृत सांस्कृतिक सोसाइटी **'वसुंधरा मंच'** विविध सांस्कृतिक आयोजनों के अलावा अपने सदस्यों के लिए भारत और विश्व की उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन भी करती है। इन गतिविधियों की ताज़ा जानकारी आप 'वसुंधरा समाचार' से प्राप्त कर सकते हैं।

अगर पुस्तकों और सांस्कृतिक गतिविधियों में आपकी रुचि है तो **'वसुंधरा'** आएं और इन प्रगतिकामी प्रयासों में हमारे हिस्सेदार बनें। हम आपको **'वसुंधरा बुक क्लब'** और **'वसुंधरा मंच'** का सदस्य बनने के लिए भी आमंत्रित करते हैं। आपकी जानकारी के लिए **'जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन'** एक गैर-लाभकारी संस्था है।

वसुंधरा पुस्तक केंद्र, जयपुर

'Vasundhara' is a multi-locational cultural forum dedicated to *literature, arts, theater* and *cinema.*

At our innovative book stores located at **Powai (Mumbai)** and Adarsh **Nagar (Jaipur)**, we stock books in *Hindi, English and Marathi* on diverse subjects including fiction, poetry, drama, philosophy, religion, travel, environment, recreation, history, current affairs, gender equality, health, food etc. etc. by international authors as well as writers from Indian languages, including classics as well as current prize winning titles.

We offer attractive discounts on all books, offer special offers from time to time and also deliver books at your doorstep through our website. Our section for junior readers offers books and activity books for children of all ages. If your desired title is not available with us, we will arrange to procure it for you as soon as possible.

'Vasundhara' is also engaged in organizing cultural programmes, literature readings, talks and music related activities. Our registered society ***'Vasundhara Manch'*** also arranges **film screenings** of artistic world and Indian cinema at Jaipur. Our bulletin ***'Vasundhara Samachar'*** details these activities.

If you have a passion for books and related cultural activities, do join us and participate in activities of ***'Vasundhara'***. We also invite you to take membership of ***'Vasundhara Manch'*** and ***'Vasundhara Book Club'***.

'Jan Vasundhara Sahitya Foundation' *is a non-profit organization. All donations to Jan Vasundhara Sahitya Foundation qualify for Income Tax rebate under Section 80G of Income Tax.*

Last Two Months In

Vasundhara Manch

17th April

गत 17 अप्रैल को जन वसुंधरा साहित्य फाउंडेशन की ई-पत्रिका के विमोचन में जाने-माने लेखक पंकज सुबीर

पंकज सुबीर का अंदाज़-ए बयाँ

पेशे से पत्रकार रहे उपन्यासकार-व्यंगकार और ग़ज़लकार पंकज सुबीर का 17 अप्रैल को जन वसुंधरा पर आना मानो साहित्यिक बहार का आना...!

वैसे अगर मैंने इस वार्ता की सार्थकता का पूरा श्रेय केवल उपन्यास को दिया तो यह गलत होगा। चूँकि इस साहित्यिक माहौल को बराबर बनाए रखने में एक ख़ास वज़ह यह भी

मुझे आपको यह बताते हुए ख़ुशी हो रही है कि 'वसुंधरा' के मंच पर किताब की चर्चा का पहला शगुन भी श्री सुबीर के उपन्यास 'रुदाद-ए-सफ़र' से हुआ। पिता-पुत्री के रिश्ते और एनॉटमी जैसे विषय पर आधारित उपन्यास पर लेखक के साथ लगभग डेढ़ घण्टे से भी लम्बी बातचीत चली।

दर्शक दीर्घा के साथ प्रश्नोत्तरी सत्र से लग रहा था कि वार्ता काफ़ी रोचक रही। जहाँ हर कोई माइक पकड़ श्री सुबीर से उपन्यास के कथानक को और अधिक जान लेना चाहता था। वास्तव में यह पंकज जी की अपनी कमाई है। चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि- "कुछ भी प्लान करके नहीं होता और लेखन तो बिल्कुल नहीं।" शायद यही वज़ह रही कि वसुंधरा के अनौपचारिक कार्यक्रम को भी सुबीर जी ने अपने अंदाज-ए-बयां के अनप्लांड तरीके से और भी खूबसूरत बना दिया।

रही कि जिस ग़ज़ल पर श्री सुबीर का सोशल-मीडिया अकाउंट बैन हुआ था, ग़ज़ल के शौकीन 'पंकज जी' ने उस ग़ज़ल को भी मस्त होकर गाया। ये एक ऐसा क्षण था जब वसुंधरा का हर सदस्य पंकज जी की कलम के साथ-साथ उनके अंदाज़-ए-बयाँ का भी दीवाना हो चला था।

~ चेतना शर्मा
संपादक

"Yay Dil Mange More"

14th May

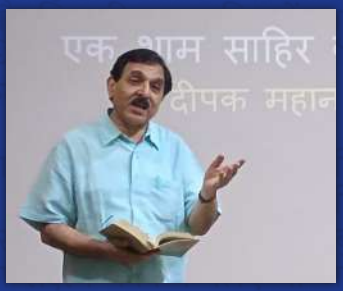

On 14th May, Sri Deepak Mahaan presented us glimpses of Sahir Ludhianavi's (SL) life, through his lyrics and songs.

Sahir, the poet, is timeless, energetic, and unique, The breadth of his oeuvre was breathtaking - from sensual to spiritual, from Bhajan to Qawwali, from Urdu to chaste Hindi...and most audience knows this, having grown up listening to those verses.

Sahir, the person, stays somewhat of an enigma, and that is what Mr. Mahaan focused on – SL's rebellion against his misogynist father at a young age, his activist background in college, his non-religious affiliations, his ability to reflect the society...and above all, his gift for writing those lyrics, almost on demand, to meet the needs of the story.

He brought the house down with the seminal 11-minute qawwali from 'Barsat Ki Raat'; the discussion had shot way past the allotted time, yet it felt that evening concluded too early.

More power to team Vasundhara, and Deepak!

~ Ajay Goyal
Member of Vasundhara Manch

मोरछले उत्सव

20th - 21st May

2017 की लद्दाखी-हिंदी पुरस्कृत फ़िल्म **'WALKING WITH THE WIND'** (78 मिनट) और प्रवीण जी से दर्शकों के साथ ऑनलाइन बातचीत सेशन के बाद 5 वर्ष पश्चात इस फ़िल्म के वास्तविक पात्रों की खोज में निकली यात्रा की दूसरी विलक्षण फ़िल्म **'COLOURS OF LIFE'** (2022)(58 मिनट) प्रदर्शित की गई।

इन दोनों हिंदी फिल्मों में लद्दाख की स्तब्ध कर देने वाली दृश्यावली और जीवन से निकले वास्तविक पात्र आपका मन मोह लेते हैं। दोनों ही फिल्मों को अनेकानेक राष्ट्रीय /अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

21 मई, रविवार शाम 5 बजे वसुंधरा मंच पर प्रवीण मोरछले की ताजा हिंदी फ़िल्म का premier show रखा गया। जो हरिशंकर परसाई की याद दिलाता है। फ़िल्म का नाम है **'SIR MADAM SARPANCH'**

8th June

अभिनेत्री Sophia Loren के अभिनय से बनी फ़िल्म **'A Special Day'** का मंचन जून 8 को वसुंधरा मंच हुआ। वुमन इम्पावरमेंट और स्त्रीवादी पहलुओं को छूती इस फ़िल्म को जीवन में एक बार ज़रूर देखना चाहिए।

साहित्य समीक्षा

कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर

- जितेंद्र भाटिया

जितेन्द्र भाटिया की इस किताब की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि इन पाँच शहरों की गुज़िश्ता ज़िंदगी और इतिहास, पहचान और गली-कूचे, तहज़ीब और तमद्दुन, शहर रहे न रहे, पर यह सब किताब के बहाने रिकार्ड पर तो दर्ज़ हो ही जाएगा। यह किताब इन शहरों की एक रचनात्मक और भौगोलिक पहचान तथा इतिहास सुरक्षित कर रही है। शहरों के मर्सिये भी लिखे गए हैं। यह किताब इन शहरों का मर्सिया तो क़तई नहीं है, पर इसकी उखड़ती साँसों की हँफन ज़रूर है जो कांक्रीट के बढ़ते जंगलों की डरावनी और बढ़ती पदचापों से काँप-काँप जाती है। 'बाज़ार' फ़िल्म में मिर्ज़ा शौक़ की मसनवी 'ज़हरे इश्क़' की कुछ प्यारी पंक्तियाँ गायी गयी हैं। इन्हें पढ़िए और देखिए, कहीं यह आपके मरते हुए शहर की आवाज़ तो नहीं है।

~ प्रियंवद

लेखक परिचय

जितेन्द्र भाटिया

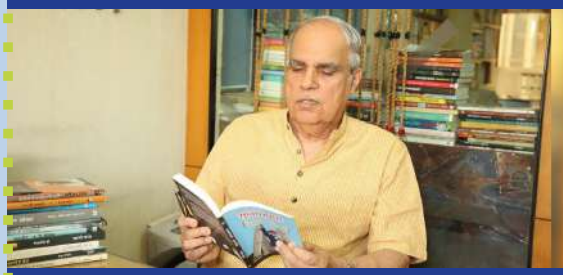

कथाकार-उपन्यासकार-निबंधकार

जितेन्द्र भाटिया ने 'सदी के प्रश्न', 'इक्कीसवीं सदी की लड़ाइयाँ', 'बस्ती बस्ती परबत परबत', 'कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर' एवं कुछ धारावाहिक लेखन के जरिये हमारी 'सभ्यता, विकास और उन्माद' को बौद्धिक रुप से न केवल प्रश्नांकित किया है बल्कि मीमांसा करते हुए उसे ऐतिहासिक रुप से देखने-समझने की दृष्टि भी दी है।

~ कुमार अम्बुज

Collection

51 क़िताबें ग़ज़लों की

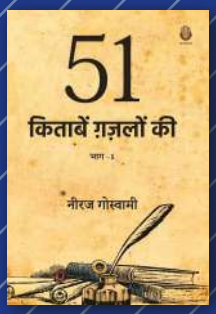

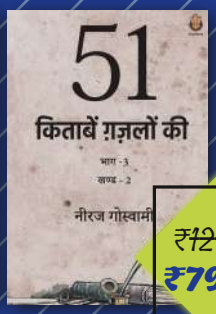

101 क़िताबें ग़ज़लों की

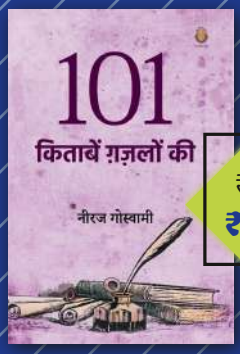

मेरी इन किताबों को किस श्रेणी में रखा जाए यह तो मुझे भी नहीं मालूम। ये किताबें उन लेखों का संग्रह है जो मैंने अपने ब्लॉग पर ग़ज़ल की किताबें पढ़ने के बाद लिखने शुरु किए। ये लेख न तो समीक्षा की श्रेणी में आते हैं और न ही आलोचना की श्रेणी में। मैंने इन लेखों को एक पाठक के दृष्टिकोण से बातचीत के अंदाज में लिखा है, जिसमें मैंने अपने द्वारा पढ़ी गई किताब के पसंदीदा शेरों को उनके शायर के बारे में मिली जानकारी के साथ अपने पाठकों के सामने रखा है।

लेखक - **नीरज गोस्वामी**

किताबें सीधे आपके दरवाजे पर मंगवाने के लिए अभी 82094 51655 WhatsApp करें।

For more collections and Special Offers, please visit- www.vasundharabooks.com

Find us *'Jan Vasundhara Sahitya Foundation'* vasundhara.sahitya@gmail.com

'वसुंधरा समाचार' -- जन वसुंधरा फाउंडेशन का मासिक मुखपत्र (केवल सदस्यों के लिए) (For private circulation only)

संयोजन और सम्पादन -- चेतना शर्मा मुम्बई प्रतिनिधि -- रेखा जिन्दे लेआउट -- सागर कोवे